oliveboard

हिंदी भाषा सम्पूर्ण परिचय

भाग-2

(Complete Guide for Hindi Language Preparation)

For LIC Assistant Mains Exam

भाग-1 में हमने जिन विषयों से सम्बंधित व्याकरणिक जानकारी आपको उपलब्ध कराई गई थी उससे आगे बढ़ते हुए हम आपके लिए लायें हैं "*हिंदी भाषा सम्पूर्ण परिचय भाग-२*" इस लेख के अंतर्गत अन्य संभावित व्याकरणिक और भाषाई क्षमता के अन्य पक्षों से आप अवगत होंगे-

जैसा की हमने वाक्य संरचना को बेहतरीन ढंग से समझ लिया है जिससे आप 'पाठ बोध' 'रिक्त स्थान' 'वाक्य पुनर्व्यवस्था' और साथ ही "त्रुटि ज्ञात" करने के प्रश्नों को आसानी से हल कर सकते हैं|

भाषा को पूर्णत: दो लेखों में समेटना मुश्किल है परन्तु जिन पक्षों को जानने से आप परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन कर पायेंगें उनका जिक्र किया जा सकता है! और इसीलिए आपका *ओलिवबोर्ड मॉक टेस्ट* देना अनिवार्य हो जाता है क्योंकि अभ्यास के बिना व्याकरणिक सिद्धांतों में पारंगत नहीं हुआ जा सकता| अत: अभ्यास अवश्य करें और *ओलिवबोर्ड एल. आई. सी. अस्सिटेंट मॉक टेस्ट* ***जरूर दें|***

इस लेख में मुहावरे, लोकोक्तियाँ, समास उपसर्ग और प्रत्यय का परिचय दिया जाएगा ताकि सभी संभावित प्रश्नों के सामग्री से आप अवगत हो जाएं-

मुहावरा Idioms) की परिभाषा

ऐसे वाक्यांश, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराये, मुहावरा कहलाता है।

मतलब मुहावरा भाषा विशेष में प्रचलित उस अभिव्यक्तिक इकाई को कहते हैं, जिसका प्रयोग प्रत्यक्षार्थ से अलग रूढ़पारम्परिक) लक्ष्यार्थअर्थ) के लिए किया जाता है।

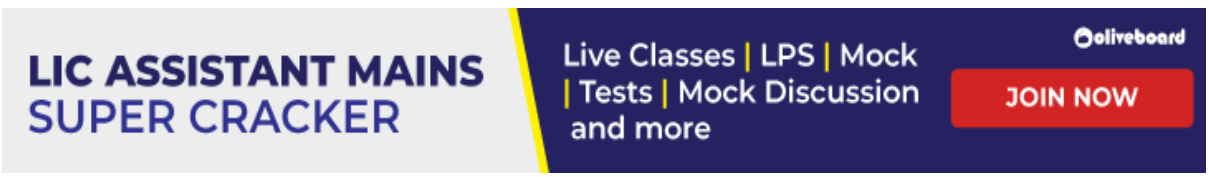

इसी परिभाषा से मुहावरे के विषय में निम्नलिखित बातें सामने आती हैं-
(1) मुहावरों का संबंध भाषा विशेष से होता है अर्थात हर भाषा की प्रकृति, उसकी संरचना तथा सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भों के अनुसार उस भाषा के मुहावरे अपनी संरचना तथा अर्थ को निर्धारित करते हैं।
(2) मुहावरों का अर्थ उनके प्रत्यक्षार्थ से भिन्न होता है अर्थात मुहावरों के अर्थ सामान्य उक्तियों से भिन्न होते हैं। इसका तात्पर्य यही है कि सामान्य उक्तियों या कथनों की तुलना में मुहावरों के अर्थ विशिष्ट होते हैं।
(3) मुहावरों के अर्थ अभिधापरक न होकर लक्षणापरक होते हैं अर्थात उनके अर्थ लक्षणा शक्ति से निकलते हैं तथा अपने विशिष्ट अर्थ लक्ष्यार्थ) में रूढ़ हो जाते हैं।

उदाहरण के लिए-
(1) परीक्षा में प्रथम स्थान आने की सूचना पाकर मैं ख़ुशी से फूला न समाया अर्थात बहुत खुश हो जाना।

'मुहावरा' शब्द अरबी भाषा से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है- अभ्यास। हिंदी भाषा में मुहावरों का प्रयोग भाषा को सुंदर, प्रभावशाली, संक्षिप्त तथा सरल बनाने के लिए किया जाता है। ये वाक्यांश होते हैं। इनका प्रयोग करते समय इनका शाब्दिक अर्थ न लेकर विशेष अर्थ लिया जाता है। इनके विशेष अर्थ कभी नहीं बदलते। ये सदैव एक-से रहते हैं। ये लिंग, वचन और क्रिया के अनुसार वाक्यों में प्रयुक्त होते हैं।

मुहावरे : भेद-प्रभेद

मुहावरों को निम्नलिखित आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है-
(1) सादृश्य पर आधारित
(2) शारीरिक अंगों पर आधारित
(3) असंभव स्थितियों पर आधारित
(4) कथाओं पर आधारित

(5) प्रतीकों पर आधारित
(6) घटनाओं पर आधारित

(1) सादृश्य पर आधारित मुहावरे- बहुत से मुहावरे सादृश्य या समानता पर आधारित होते हैं।
जैसे- चूड़ियाँ पहनना, दाल न गलना, सोने पर सुहागा, कुंदन-सा चमकना, पापड़ बेलना आदि।

(2) शारीरिक अंगों पर आधारित मुहावरे- हिंदी भाषा के अंतर्गत इस वर्ग में बहुत मुहावरे मिलते हैं।
जैसे- अंग-अंग ढीला होना, आँखें चुराना, अँगूठा दिखाना, आँखों से गिरना, सिर हिलाना, उँगली उठाना, कमर टूटना, कलेजा मुँह को आना, गरदन पर सवार होना, छाती पर साँप लोटना, तलवे चाटना, दाँत खट्टे करना, नाक रगड़ना, पीठ दिखाना, बगलें झाँकन, मुँह काला करना आदि।

(3) असंभव स्थितियों पर आधारित मुहावरे- इस तरह के मुहावरों में वाच्यार्थ के स्तर पर इस तरह की स्थितियाँ दिखाई देती हैं जो असंभव प्रतीत होती हैं।
जैसे- पानी में आग लगाना, पत्थर का कलेजा होना, जमीन आसमान एक करना, सिर पर पाँव रखकर भागना, हथेली पर सरसों जमाना, हवाई किले बनाना, दिन में तारे दिखाई देना आदि।

(4) कथाओं पर आधारित मुहावरे- कुछ मुहावरों का जन्म लोक में प्रचलित कुछ कथा-कहानियों से होता हैं।
जैसे-टेढ़ी खीर होना, एक और एक ग्यारह होना, हाथों-हाथ बिक जाना, साँप को दूध पिलाना, रँगा सियार होना, दुम दबाकर भागना, काठ में पाँव देना आदि।

(5) प्रतीकों पर आधारित मुहावरे- कुछ मुहावरे प्रतीकों पर आधारित होते हैं।
जैसे- एक आँख से देखना, एक ही लकड़ी से हाँकना, एक ही थैले के चट्टे-बट्टे होना, तीनों मुहावरों में प्रयुक्त 'एक' शब्द 'समानता' का प्रतीक है।
इसी तरह से डेढ़ पसली का होना, ढाई चावल की खीर पकाना, ढाई दिन की बादशाहत होना, में डेढ़ तथा ढाई शब्द 'नगण्यता' के प्रतीक है।

(6) घटनाओं पर आधारित मुहावरे- कुछ मुहावरों के मूल में कोई घटना भी रहती है।
जैसे- काँटा निकालना, काँव-काँव करना, ऊपर की आमदनी, गड़े मुर्दे उखाड़ना आदि।

यहाँ पर आपके लिए कुछ प्रसिद्ध मुहावरे और उनके अर्थ वाक्य में प्रयोग सहित दिए जा रहे है।

अक्ल पर पत्थर पड़ना (बुद्धि भ्रष्ट होना)- विद्वान और वीर होकर भी रावण की अक्ल पर पत्थर ही पड़ गया था कि उसने राम की पत्नी का अपहरण किया।

अंक भरना (स्नेह से लिपटा लेना)- माँ ने देखते ही बेटी को अंक भर लिया।

अंग टूटना (थकान का दर्द)- इतना काम करना पड़ा कि आज अंग टूट रहे है।

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना (स्वयं अपनी प्रशंसा करना)- अच्छे आदमियों को अपने मुहँ मियाँ मिट्ठू बनना शोभा नहीं देता।

आँख भर आना (आँसू आना)- बेटी की विदाई पर माँ की आखें भर आयी।

आँखों में बसना (हृदय में समाना)- वह इतना सुंदर है की उसका रूप मेरी आखों में बस गया है।

आँखे खुलना (सचेत होना)- ठोकर खाने के बाद ही बहुत से लोगों की आँखे खुलती हैं।

आँख का तारा - (बहुत प्यारा)- आज्ञाकारी बच्चा माँ-बाप की आँखों का तारा होता है।

आँखे दिखाना (बहुत क्रोध करना)- राम से मैंने सच बातें कह दी, तो वह मुझे आँख दिखाने लगा।

oliveboard
100+ FREE Mock Tests
• Full-Length Mock Tests
• Sectional tests
• Topic tests
• GK tests
Register Now
For Bank, Insurance, SSC & Railway Exams

आसमान से बातें करना (बहुत ऊँचा होना)- आजकल ऐसी ऐसी इमारते बनने लगी हैं, जो आसमान से बातें करती है।

यदि आपको सम्पूर्ण हिंदी मुहावरों की सूची चाहिए तो उसके लिए अलग से ई-बुक उपलब्ध करा सकते हैं| उसके लिए हमें अलग से जरूर बताएं|

लोकोक्तियाँ -

लोकोक्तियाँ proverbs) की परिभाषा

किसी विशेष स्थान पर प्रसिद्ध हो जाने वाले कथन को 'लोकोक्ति' कहते हैं।

'लोकोक्ति' शब्द 'लोक + उक्ति' शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ है- लोक में प्रचलित उक्ति या कथन'। संस्कृत में 'लोकोक्ति' अलंकार का एक भेद भी है तथा सामान्य अर्थ में लोकोक्ति को 'कहावत' कहा जाता है।

चूँकि लोकोक्ति का जन्म व्यक्ति द्वारा न होकर लोक द्वारा होता है अतः लोकोक्ति के रचनाकार का पता नहीं होता। इसलिए अँग्रेजी में इसकी परिभाषा दी गई है- ' A proverb is a saying without an author' अर्थात लोकोक्ति ऐसी उक्ति है जिसका कोई रचनाकार नहीं होता।

वृहद् हिंदी कोश में लोकोक्ति की परिभाषा इस प्रकार दी गई है-
'विभिन्न प्रकार के अनुभवों, पौराणिक तथा ऐतिहासिक व्यक्तियों एवं कथाओं, प्राकृतिक नियमों और लोक विश्वासों आदि पर आधारित चुटीली, सारगर्भित, संक्षिप्त, लोकप्रचलित ऐसी उक्तियों को लोकोक्ति कहते हैं, जिनका प्रयोग किसी बात की पुष्टि, विरोध, सीख तथा भविष्य-कथन आदि के लिए किया जाता है।

मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर

मुहावरे	लोकोक्तियाँ
(1) मुहावरे वाक्यांश होते हैं, पूर्ण वाक्य नहीं; जैसे- अपना उल्लू सीधा करना, कलम तोड़ना आदि। जब वाक्य में इनका प्रयोग होता तब ये संरचनागत पूर्णता प्राप्त करती है।	(1) लोकोक्तियाँ पूर्ण वाक्य होती हैं। इनमें कुछ घटाया-बढ़ाया नहीं जा सकता। भाषा में प्रयोग की दृष्टि से विद्यमान रहती है; जैसे- चार दिन की चाँदनी फेर अँधेरी रात।
(2) मुहावरा वाक्य का अंश होता है, इसलिए उनका स्वतंत्र प्रयोग संभव नहीं है; उनका प्रयोग वाक्यों के अंतर्गत ही संभव है।	(2) लोकोक्ति एक पूरे वाक्य के रूप में होती है, इसलिए उनका स्वतंत्र प्रयोग संभव है।
(3) मुहावरे शब्दों के लाक्षणिक या व्यंजनात्मक प्रयोग हैं।	(3) लोकोक्तियाँ वाक्यों के लाक्षणिक या व्यंजनात्मक प्रयोग हैं।
(4) वाक्य में प्रयुक्त होने के बाद मुहावरों के रूप में लिंग, वचन, काल आदि व्याकरणिक कोटियों के कारण परिवर्तन होता है; जैसे- आँखें पथरा जाना। प्रयोग- पति का इंतजार	(4) लोकोक्तियों में प्रयोग के बाद में कोई परिवर्तन नहीं होता; जैसे- अधजल गगरी छलकत जाए। प्रयोग- वह अपनी योग्यता की डींगे मारता रहता है जबकि वह कितना योग्य है सब जानते हैं। उसके लिए तो यही

मुहावरे	लोकोक्तियाँ
करते-करते माला की आँखें पथरा गयीं।	कहावत उपयुक्त है कि 'अधजल गगरी छलकत जाए।
(5) मुहावरों का अंत प्रायः इनफीनीटिव 'ना' युक्त क्रियाओं के साथ होता है; जैसे- हवा हो जाना, होश उड़ जाना, सिर पर चढ़ना, हाथ फैलाना आदि।	(5) लोकोक्तियों के लिए यह शर्त जरूरी नहीं है। चूँकि लोकोक्तियाँ स्वतः पूर्ण वाक्य हैं अतः उनका अंत क्रिया के किसी भी रूप से हो सकता है; जैसे- अधजल गगरी छलकत जाए, अंधी पीसे कुत्ता खाए, आ बैल मुझे मार, इस हाथ दे, उस हाथ ले, अकेली मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।
(6) मुहावरे किसी स्थिति या क्रिया की ओर संकेत करते हैं; जैसे हाथ मलना, मुँह फुलाना?	(6) लोकोक्तियाँ जीवन के भोगे हुए यथार्थ को व्यंजित करती हैं; जैसे- न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी, ओस चाटे से प्यास नहीं बुझती, नाच न जाने आँगन टेढ़ा।
(7) मुहावरे किसी क्रिया को पूरा करने का काम करते हैं।	(7) लोकोक्ति का प्रयोग किसी कथन के खंडन या मंडन में प्रयुक्त किया जाता है।
(8) मुहावरों से निकलने वाला अर्थ लक्ष्यार्थ होता है	(8) लोकोक्तियों के अर्थ व्यंजना शक्ति से निकलने के कारण व्यंग्यार्थ के स्तर के होते हैं।

मुहावरे	लोकोक्तियाँ
जो लक्षणा शक्ति से निकलता है।	
(9) मुहावरे 'तर्क' पर आधारित नहीं होते अतः उनके वाच्यार्थ या मुख्यार्थ को स्वीकार नहीं किया जा सकता; जैसे- ओखली में सिर देना, घाव पर नमक छिड़कना, छाती पर मूँग दलना।	(9) लोकोक्तियाँ प्रायः तर्कपूर्ण उक्तियाँ होती हैं। कुछ लोकोक्तियाँ तर्कशून्य भी हो सकती हैं; जैसे- **तर्कपूर्ण :** (i) काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती। (ii) एक हाथ से ताली नहीं बजती। (iii) आम के आम गुठलियों के दाम। **तर्कशून्य :** (i) छछूंदर के सिर में चमेली का तेल।
(10) मुहावरे अतिशय पूर्ण नहीं होते।	(10) लोकोक्तियाँ अतिशयोक्तियाँ बन जाती हैं।

यहाँ कुछ लोकोक्तियाँ व उनके अर्थ तथा प्रयोग दिये जा रहे हैं-

अन्धों में काना राजा= (मूर्खो में कुछ पढ़ा-लिखा व्यक्ति)

प्रयोग- मेरे गाँव में कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति तो है नही; इसलिए गाँववाले पण्डित अनोखेराम को ही सब कुछ समझते हैं। ठीक ही कहा गया है, अन्धों में काना राजा।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता = (अकेला आदमी बिना दूसरों के सहयोग के कोई बड़ा काम नहीं कर सकता।)
प्रयोग- मैं जानता हूँ कि 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता' फिर भी जो काम स्वयं के करने का है, वह जरूर करूँगा।

अधजल गगरी छलकत जाय = (जिसके पास थोड़ा ज्ञान होता हैं, वह उसका प्रदर्शन या आडम्बर करता है।)
प्रयोग- रमेश बारहवीं पास करके स्वयं को बहुत बड़ा विद्वान समझ रहा है। ये तो वही बात हुई कि अधजल गगरी छलकत जाय।

ओखली में सिर दिया, तो मूसलों से क्या डर= (काम करने पर उतारू होना)
प्रयोग- जब मैनें देशसेवा का व्रत ले लिया, तब जेल जाने से क्यों डरें? जब ओखली में सिर दिया, तब मूसलों से क्या डर।

आ बैल मुझे मार= (स्वयं मुसीबत मोल लेना)
प्रयोग- लोग तुम्हारी जान के पीछे पड़े हुए हैं और तुम आधी-आधी रात तक अकेले बाहर घूमते रहते हो। यह तो वही बात हुई- आ बैल मुझे मार।

आँखों के अन्धे नाम नयनसुख= (गुण के विरुद्ध नाम होना)
प्रयोग- उसका नाम तो करोड़ीमल है परन्तु वह पैसे-पैसे के लिए मारा-मारा फिरता है। इसे कहते है- आँखों के अन्धे नाम नयनसुख।

इधर कुआँ और उधर खाई= (हर तरफ विपत्ति होना)
प्रयोग- न बोलने में भी बुराई है और बोलने में भी; ऐसे में मेरे सामने इधर कुआँ और उधर खाई है।

इन तिलों में तेल नहीं निकलता = कंजूसों से कुछ प्राप्त नहीं हो सकता।
प्रयोग- तुम यहाँ व्यर्थ ही आए हो मित्र! ये तुम्हें कुछ नहीं देंगे- इन तिलों में से तेल नहीं निकलेगा।

ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया = (ईश्वर की बातें विचित्र हैं।)
प्रयोग- कई बेचारे फुटपाथ पर ही रातें गुजारते हैं और कई भव्य बंगलों में आनन्द करते हैं। सच है ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया।

ऊँची दुकान फीके पकवान = (जिसका नाम अधिक हो, पर गुण कम हो)
प्रयोग- उस कंपनी का नाम ही नाम है, गुण तो कुछ भी नहीं है। बस 'ऊँची दुकान फीके पकवान' है।

ऊँट के मुँह में जीरा = (जरूरत के अनुसार चीज न होना)
प्रयोग- विद्यालय के ट्रिप में जाने के लिए 2,500 रुपये चाहिए थे, परंतु पिता जी ने 1,000 रुपये ही दिए। यह तो ऊँट के मुँह में जीरे वाली बात हुई।

ऊधो का लेना न माधो का देना = (केवल अपने काम से काम रखना)
प्रयोग- प्रोफेसर साहब तो बस अध्ययन और अध्यापन में लगे रहते हैं। गुटबन्दी से उन्हें कोई लेना-देना नहीं- ऊधो का लेना न माधो का देना।

उपसर्ग की परिभाषा

भाषा के वह सार्थक एवं छोटे खंड जो किसी शब्द के आरम्भ में लग जाते हैं एवं उससे मिलकर किसी दूसरे शब्द का निर्माण कर देते हैं।

उपसर्ग शब्द का अर्थ होता है - समीप आकर नया शब्द बनाना। अर्थात यह किसी शब्द साथ लगकर नया शब्द बनाता है।

उपसर्ग लगने के बाद शब्द का अर्थ बदल जाता है।

हिंदी के उपसर्ग

हिंदी के कुछ उपसर्ग इस प्रकार हैं:

दु उपसर्ग : दु का अर्थ होता है **बुरा, हीन, दो, विशेष, कम।**

उदाहरण: दुबला, दुर्जन, दुर्बल, दुलारा, दुधारू, दुसाध्य, दुरंगा, दुलत्ती, दुनाली, दुराहा, दुपहरी, दुगुना, दुकाल आदि।

2. **अध् उपसर्ग:** अध् का अर्थ होता है **आधा।**

उदाहरण: अधपका, अधमरा, अधक्च्चा, अधकचरा, अधजला, अधखिला, अधगला, अधनंगा आदि।

3. **अन** उपसर्ग: अन का अर्थ होता है **अभाव, निषेध, नहीं।**

उदाहरण: अनजान, अनकहा, अनदेखा, अनमोल, अनबन, अनपढ़, अनहोनी, अछूत, अचेत, अनचाहा, अनसुना, अलग, अनदेखी आदि।

4. **उन** उपसर्ग: उन का अर्थ होता है **एक कम।**

उदाहरण: उनतीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर, उनतालीस, उन्नीस, उन्नासी आदि।

5. **कु उपसर्ग:** कु का अर्थ होता है **बुरा, हीन।**

उदाहरण: कुचाल, कुचैला, कुचक्र, कपूत, कुढंग, कुसंगति, कुकर्म, कुरूप, कुपुत्र, कुमार्ग, कुरीति, कुख्यात, कुमति आदि।

6. **औ** उपसर्ग: औ का अर्थ होता है **हीन, अब, निषेध।**

उदाहरण: औगुन, औघर, औसर, औसान, औघट, औतार, औगढ़, औढर आदि।

7. **अ** उपसर्ग: अ का अर्थ होता है **अभाव, निषेध।**

उदाहरण: अछुता, अथाह, अटल, अचेत आदि।

8. **नि** उपसर्ग: नि का अर्थ होता है **रहित, अभाव, विशेष, कमी।**

उदाहरण: निडर, निक्कमा, निगोड़ा, निहत्था, निहाल आदि।

9. **चौ** उपसर्ग: चौ का अर्थ होता है **चार।**

उदाहरण: चौपाई, चौपाया, चौराहा, चौकन्ना, चौमासा, चौरंगा, चौमुखा, चौपाल आदि।

10. **उ** उपसर्ग: उ का अर्थ होता है **अभाव, हीनता।**

उदाहरण: उचक्का, उजड़ना, उछलना, उखाड़ना, उतावला, उदर, उजड़ा, उधर आदि।

11. **पच** उपसर्ग: पच का अर्थ होता है **पांच।**

उदाहरण: पचरंगा, पचमेल, पचकूटा, पचमढ़ी आदि।

12. **ति** उपसर्ग: ति का अर्थ होता है **तीन।**

तिरंगा, तिराहा, तिपाई, तिकोन, तिमाही आदि।

प्रत्यय की परिभाषा

ऐसे शब्द जिनका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता लेकिन वे **दूसरे शब्द के बाद लगकर उनका अर्थ बदल देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।**

कभी कभी प्रत्यय लगाने से अर्थ में कोई बदलाव नहीं होता है।

<u>उदाहरण :</u>

भूल + अक्कड़ :भुलक्कड़

ऊपर दिए जैसा की आप देख सकते हैं पहले शब्द था **भूल** जिसका मतलब था **भूलना** लेकिन **अक्कड़** प्रत्यय लगने के बाद शब्द बन गया **भुलक्कड़** जिसका मतलब हुआ वह व्यक्ति जो भूल करता है।

समास की परिभाषा

समास का मतलब है संक्षिप्तीकरण। दो या दो से अधिक शब्द मिलकर एक नया एवं सार्थक शब्द की रचना करते हैं। यह नया शब्द ही समास कहलाता है।

यानी कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रकट किया जा सके वही समास होता है। **जैसे:**

समास के उदाहरण :

कमल के सामान चरण : चरणकमल

रसोई के लिए घर : रसोईघर

घोड़े पर सवार : घुड़सवार

देश का भक्त : देशभक्त

राजा का पुत्र : राजपुत्र आदि।

सामासिक शब्द या समस्तपद : जो शब्द समास के नियमों से बनता है वह सामासिक शब्द या समस्तपद कहलाता है।

पूर्वपद एवं उत्तरपद : सामासिक शब्द के पहले पद को पूर्व पद कहते हैं एवं दुसरे या आखिरी पद को उत्तर पद कहते हैं।

समास के भेद

समास के छः भेद होते है :

तत्पुरुष समास

अव्ययीभाव समास

कर्मधारय समास

द्विगु समास

द्वंद्व समास

बहुव्रीहि समास

1. तत्पुरुष समास :

जिस समास में उत्तरपद प्रधान होता है एवं पूर्वपद गौण होता है वह समास तत्पुरुष समास कहलाता है। **जैसे:**

धर्म का ग्रन्थ : धर्मग्रन्थ

राजा का कुमार : राजकुमार

तुलसीदासकृत : तुलसीदास द्वारा कृत

तत्पुरुष समास के प्रकार :

कर्म तत्पुरुष : 'को' के लोप से यह समास बनता है। **जैसे:** ग्रंथकार : ग्रन्थ **को** लिखने वाला

करण तत्पुरुष : 'से' और 'के द्वारा' के लोप से यह समास बनता है। **जैसे:** वाल्मिकिरचित : वाल्मीकि **के द्वारा** रचित

सम्प्रदान तत्पुरुष : 'के लिए' का लोप होने से यह समास बनता है। **जैसे:** सत्याग्रह : सत्य **के लिए** आग्रह

अपादान तत्पुरुष : 'से' का लोप होने से यह समास बनता है। **जैसे:** पथभ्रष्ट: पथ **से** भ्रष्ट

सम्बन्ध तत्पुरुष : 'का', 'के', 'की' आदि का लोप होने से यह समास बनता है। **जैसे:** राजसभा : राजा **की** सभा

अधिकरण तत्पुरुष : 'में' और 'पर' का लोप होने से यह समास बनता है। **जैसे:** जलसमाधि : जल **में** समाधि

2. अव्ययीभाव समास:

वह समास जिसका पहला पद अव्यय हो एवं उसके संयोग से समस्तपद भी अव्यय बन जाए, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। अव्ययीभाव समास में पूर्वपद प्रधान होता है।

अव्यय : जिन शब्दों पर लिंग, कारक, काल आदि शब्दों से भी कोई प्रभाव न हो जो अपरिवर्तित रहें वे शब्द अव्यय कहलाते हैं।

अव्ययीभाव समास के पहले पद में अनु, आ, प्रति, यथा, भर, हर, आदि आते हैं। **जैसे:**

आजन्म: जन्म से लेकर

यथामति : मति के अनुसार

प्रतिदिन : दिन-दिन

यथाशक्ति: शक्ति के अनुसार आदि।

(अव्ययीभाव समास के बारे में अधिक जानकारी के लिए यहाँ क्लिक करें - अव्ययीभाव समास : परिभाषा एवं उदाहरण)

3. कर्मधारय समास:

वह समास जिसका पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है, अथवा एक पद उपमान एवं दूसरा उपमेय होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

कर्मधारय समास का विग्रह करने पर दोनों पदों के बीच में 'है जो' या 'के सामान' आते हैं। **जैसे:**

महादेव : महान है जो देव

दुरात्मा : बुरी है जो आत्मा

करकमल : कमल के सामान कर

नरसिंह : सिंह रुपी नर

चंद्रमुख : चन्द्र के सामान मुख आदि।

4. द्विगु समास:

वह समास जिसका पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण होता है तथा समस्तपद समाहार या समूह का बोध कराए, उसे द्विगु समास कहते हैं। **जैसे:**

दोपहर : दो पहरों का समाहार

शताब्दी : सौ सालों का समूह

पंचतंत्र : पांच तंत्रों का समाहार

सप्ताह : सात दिनों का समूह

5. द्वंद्व समास:

जिस समस्त पद में दोनों पद प्रधान हों एवं दोनों पदों को मिलाते समय 'और', 'अथवा', या 'एवं ' आदि योजक लुप्त हो जाएँ, वह समास द्वंद्व समास कहलाता है। **जैसे:**

अन्न-जल : अन्न और जल

अपना-पराया : अपना और पराया

राजा-रंक : राजा और रंक

देश-विदेश : देश और विदेश आदि।

6. बहुव्रीहि समास :

जिस समास के समस्तपदों में से कोई भी पद प्रधान नहीं हो एवं दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की और संकेत करते हैं वह समास बहुव्रीहि समास कहलाता है। **जैसे:**

गजानन : गज से आनन वाला

त्रिलोचन : तीन आँखों वाला

दशानन : दस हैं आनन जिसके

चतुर्भुज : चार हैं भुजाएं जिसकी

मुरलीधर : मुरली धारण करने वाला आदि।

अनेकार्थी शब्द की परिभाषा

ऐसे शब्द, जिनके अनेक अर्थ होते है, अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

दूसरे शब्दों में- जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें 'अनेकार्थी शब्द' कहते है।

अनेकार्थी का अर्थ है - एक से अधिक अर्थ देने वाला।

भाषा में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है, जो अनेकार्थी होते हैं।

चंचला- लक्ष्मी, स्त्री, बिजली

यहाँ कुछ प्रमुख अनेकार्थी शब्द दिए जा रहे हैं।

ईश्वर- परमात्मा, स्वामी, शिव, पारा, पीतल।

इतर- दूसरा, साधारण, नीच।

इंगित- संकेत, अभिप्राय, हिलना-डूलना।

इन्द्र- देवराज, राजा, रात्रि।

उत्तर- उत्तर दिशा, जवाब, हल, अतीत, पिछला, बाद का इत्यादि।

उग्र- विष, प्रचंड, महादेव।

खल- दुष्ट, धतूरा, बेहया, धरती, सूर्य, दवा कूटने का खरल।

खैर- कत्था, कुशल।

खंज- खंजन, लँगड़ा

गोत्र- वंश, वज्र, पहाड़, नाम।

गिरा- सरस्वती, गिरना, वाणी।

गौर- गोरा, विचार।

घाट- नावादि से उतरने-चढ़ने का स्थान, तरफ।

घृणा- घिन, बादल।

LIC ASSISTANT MAINS SUPER CRACKER
Live Classes | LPS | Mock | Tests | Mock Discussion and more
oliveboard
JOIN NOW

चय- समूह, नींव, टीला, तिपाई, किले का फाटक।
छन्द- इच्छा, पद, वृत्त।

जलज- कमल, मोती, शंख, मछली, जोंक, चन्द्रमा, सेवार।
ठाकुर- देवता, हजाम, क्षत्रिय।

तमचर- उल्लू, राक्षस, चोर।
तीर्थ- देवस्थान, शास्त्र, गुरु।
थान- स्थान, अदद, पशुओं के बाँधने की जगह।

द्वीप- टापू, आश्रम, हाथी, अवलम्ब।
द्रोण- द्रोणाचार्य, डोंगी, कौआ।
दर्शन- मुलाकात, एक शास्त्र, स्वप्न, तत्वज्ञान।
दिनेश- उक्ति, भिक्षा, सूर्य, आदेश।

धन- सम्पति, शुभ कार्य, श्रेय, न्याय, योग।
धर्म- प्रकृति, स्वभाव, कर्तव्य, सम्प्रदाय।
नाक- नासिका, स्वर्ग, मान।
नागर- चतुर, नागरिक, सोंठ।
नाग- हाथी, पर्वत, बादल, साँप।
नग- पर्वत, वृक्ष, रत्न विशेष, चाव, अचल, नगीना।
निशाचर- राक्षस, प्रेत, उल्लू, साँप, चोर।

मुद्रा- मुहर, आकृति, सिक्का, अँगूठी, रूप, धन।

समानार्थी शब्द-

"वे शब्द जिनका अर्थ एक समान होता हैं समानार्थी शब्द कहलाते हैं समानर्थी शब्द को हम पर्यायवाची शब्द भी कहते है"

पर्याय' का अर्थ है 'समान' तथा 'वाची' का अर्थ है 'बोले जाने वाले' अर्थात सामान बोले जाने वाले शब्दों को हम पर्यावाची शब्द या सामनार्थी शब्द कहते है। पर्यायवाची शब्दों या समानार्थी शब्दों को समानार्थक शब्द भी कहा जाता है।

शब्द	समानार्थी शब्द
गणेश	गणपति, गजवदन, गजमुख, गजानन, विनायक, लम्बोदर, भवानीनन्दन, गौरीसूत, एकदन्त, विध्नेश
गंगा	भागीरथी, देवापगा, सुरसरि, विष्णुपदी, मन्दाकिनी, देवनदी, सुरसरिता
चन्द्रमा	मयंक, राकेश, शशि, सोम, इंदु, मृगांक, हिमकर, चंद्र, सुधांशु, सुधाकर, कलानिधि
कामदेव	मनोभव, मनोज, अनग, मनसिज, मार, मन्मथ, रतिपति, रतिनाथ, मदन, मकरध्वज, मिनकेतु
इन्द्र	सुरेश, शचीपति, सुरपति, देवेंद्र, पुरन्दर, देवेश, वासव, मधवा, सुरेन्द्र
इच्छा	अभिलाषा, कामना, वांछा, आकांक्षा, मनोरथ, स्पृहा
तालाब	सर, सरोवर, जलाशय, तड़ाग, पुष्कर

अश्व	घोड़ा, हय, घोतक, बाजि, तुरंग
असुर	राक्षस, दनुज, नुशाचर, दैत्य, रजनीचर
दांत	दंत, द्विज, रद
अरण्य	जंगल, वन, कान्तार, कानन, विपिन
दास	सेवक, भृत्य, नौकर, किंकर, अनुचर
दुःख	शोक, खेद, व्यथा, कष्ट, यातना, यन्त्रणा
अग्नि	पाक, आग, अनल, हुताशन, कृशानु
अर्जुन	पार्थ, धनंजय, कौन्तेय, गुडाकेश, भारत
दुग्ध	दूध, क्षीर, पय, स्तन्य, अमृत
किरण	किरन, अंशु, रश्मि, मयूख
किरीट	ताज, मुकुट, शिरोभूषण
किश्ती	कश्ती, नाव, नौका, नैया

कीर	तोता, सुग्गा, सुआ, शुक
कुंभ	घड़ा, गागर, घट, कलश
कुसुम	पुष्प, फूल, प्रसून, पुहुप
कृश	दुबला, क्षीणकाय, कमजोर, दुर्बल, कृशकाय
चन्द्र	शशि, कलाधर, निशाकर, मृगांक, राकापति, हिमकर, राकेश, रजनीश, निशानाथ, सोम, मयंक, सारंग, सुधाकर, कलानिधि
कृषि	किसानी, खेतीबाड़ी, काश्तकारी
केतन	ध्वज, झंडा, पताका, परचम

इस लेख में हिंदी की तमाम लघुतम सम्भावित इकाइयों से आपका परिचय कराया गया आशा है इससे आपकी हिंदी सम्बंधित तैयारी पूरी होगी और आप अपनी सफलता सुनिश्चित करेंगे| पुनः आपको स्मरण करा दें यहाँ सभी सैद्धांतिक पक्ष हैं अतः आप परीक्षा के वास्तविक अनुभव और व्यवहारिक अभ्यास के लिए ***ओलिबोर्ड मॉक टेस्ट अवश्य दें***|

FREE Ebooks

Download Now

Current Affairs

Explore Now

FREE MOCK TESTS + TOPIC TESTS + SECTIONAL TESTS

For Banking, Insurance, SSC & Railways Exams

Web

APP

BLOG

Your one-stop destination for all exam related information & preparation resources.

Explore Now

FORUM

Interact with peers & experts, exchange scores & improve your preparation.

Explore Now